पाठ-5 कहानी (हामिद खाँ)

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर Question-Answers from Textbook

प्र.1 लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

उत्तर तक्षशिला भ्रमण के दौरान लेखक पेट की भूख मिटाने के लिए जिस होटल में पहुँचा वह वहाँ के स्थानीय पठान हामिद खाँ का था, जिसे यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ था कि एक हिंदू मुसलमानी होटल में खाना खाने आया है।

प्र.2 'काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता।' — हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर हामिद के इलाके के हिंदू मुसलमानों से घृणा करते थे। उनमें आपसी भाईचारा नहीं था। हामिद यह मानकर चलता था कि हिंदुस्तान में भी यही माहौल होगा। हालाँकि स्वयं हामिद आपसी भाईचारे का हिमायती था। इसीलिए जब लेखक ने उसे बताया कि वहाँ हिंदू-मुसलमान मिल-जुलकर रहते हैं, एक-दूसरे के होटलों में खाने-पीने आते-जाते हैं, तो उसने अपनी दिली इच्छा प्रकट की कि काश! मैं भी वह खुशनुमा मंज़र अपनी आँखों से देख पाता।

प्र.3 हामिद को लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?

उत्तर हामिद के आसपास का माहौल आपसी घृणा से भरा था, इसलिए उसे लेखक के इस कथन पर यकीन नहीं हो पा रहा था कि कोई मुल्क ऐसा भी हो सकता है जहाँ हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के साथ हिल-मिलकर रहते होंगे। उनके बीच आपसी लेन-देन होता होगा, वह भी खानपान संबंधी चीज़ों का। और यह सब और कहीं नहीं, उस भारत में होता होगा जिसके बारे में उसे तो यही पता है कि वह हिंदुओं का देश है और हिंदू तो मुसलमानों से घृणा करने के लिए कुख्यात हैं। वे तो मुसलमानों को आततायियों की औलाद समझते हैं।

Scanned with CamScanner

प्र.4 हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इनकार क्यों किया?

उत्तर लेखक हामिद खाँ की उम्मीदों के विपरीत निकले। हामिद ने सोचा था कि यदि वे हिंदू हैं तो एक मुसलमान के होटल में खाना खाना गवारा नहीं करेंगे। वे उसे ओछी निगाह से देखेंगे। मगर लेखक ने उससे यह सब जान लेने के बाद भी उसके होटल में खाना खाना पसंद किया। खाया भी। हिंदू-मुसलमानों के बीच स्थायी वैरभाव है, उसके मन की इस धारणा को निरस्त किया। उसके मन को भली लगनेवाली बातें कहीं, तो हामिद ने मन-ही-मन लेखक को अपना ग्राहक न मानकर मेहमान मान लिया। इसीलिए उसने लेखक से खाने के पैसे लेने से इनकार किया।

प्र.5 मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के परस्पर संबंधों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर मालाबार में हिंदू-मुसलमान परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। उनमें जातिगत भेदभाव अथवा छुआछूत की भावना नहीं है। अच्छे भोजन के प्रेमी हिंदू भी बेखटके मुसलमानी होटलों में खाते-पीते हैं। वे सदियों से इसी तरह रह रहे हैं, इसका प्रमाण है हिंदुस्तान में बनी वह पहली मसजिद जो इसी इलाके में है। इतने पुराने समय से इस इलाके में मुसलमानों की मौजूदगी के बावजूद यहाँ हिंदू-मुसलिम दंगे अपवाद स्वरूप ही कभी हुए हों तो हुए हों।

प्र.6 तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

उत्तर लेखक को नेकदिल और साफ़गो इनसान पठान हामिद खाँ की खैरियत की फ़िक्र हुई। उसके साथ लेखक का वास्ता भले ही ग्राहक-दुकानदार के रूप में पड़ा था, लेकिन उसने देखते-देखते ही इस संबंध को मेज़बान-मेहमान के रूप में बदल दिया था। उस परदेशी की खैरियत का खयाल आना लेखक के एहसानमंद, शुक्रगुज़ार होने का परिचय देता है। लेखक ने हामिद खाँ की खैरियत के लिए खुदा से जो दुआ माँगी वह इसका पक्का सुबूत है कि लेखक हर नेक बंदे के लिए फ़िक्रमंद होता है। इस मामले में अपना-पराया या जाति-धर्म-देश के आधार पर नहीं विचारता।

Scanned with CamScanner